

अँखिया स्त्री. (देश.) (तद्.आँख) 1. नेत्र, आँख प्रयो. अँखिया हरि दरसन को प्यासी 2. नक्काशी करने की लोहे की बनी कलम।

अँखुआ पुं. (देश.) 1. किसी बीज या पौधे से फूटकर निकला हुआ अंकुर 2. कल्ला जैसे- बसंत में पौधों से नए कल्ले निकल रहे हैं।

अँखुआना अ.क्रि. (देश.) 1. पौधों से अँखुआ या अंकुर का फूटना या निकलना जैसे- पतझड़ के बाद पौधों का अँखुआना 2. अंकुरित होना।

अँगड़ाई स्त्री. (तत्.) 1. शिथिलता दूर करने के लिए शरीर के अंगों को तानने/फैलाने की क्रिया।

अँगुली स्त्री. (तत्.) दे. 'उँगली'।

अँगूठा-निशान पुं. (तत्.) दे. अँगूठा-चिह्न।

अँटना अ.क्रि. (देश.) दे. अटना।

अँतड़ी स्त्री. (तद्.) दे. आँत।

अँदरसा पुं. (तद्.) स्थान भेद से सुलभता के आधार पर चावल के आटे में खसखस, तिल, दही तथा केला आदि मिला कर तल कर बनाया जाने वाला एक विशेष मीठा पकवान।

अँधरा वि. (तत्.) 1. अंधा, दृष्टिहीन 2. विवेकशून्य, अपना भला-बुरा सोचने में असमर्थ 3. विचार किए बिना कार्य करने वाला 4. अज्ञानी, मूर्ख पुं. 1. नेत्रहीन/दृष्टिविहीन प्राणी 2. अज्ञानी व्यक्ति, मूर्ख प्राणी।

अँधियारा पुं. (तत्.) दे. 'अँधेरा'।

अँधेरी पुं. (तद्.) 1. अंधकार, अँधेरा 2. अंधकार से युक्त रात 3. धूलभरी आँधी 4. एक विशेष वस्त्र जिसे चंचल/नटखट घोड़ों, बैलों आदि अथवा शिकारी पशुओं की आँखों पर बाँधा जाता है, अँधियारी।

अँबराई स्त्री. (तत्.) दे. अमराई।

अकंटक वि. (तत्.) 1. बिना काँटे का, कंटकविहीन 2. बाधारहित, निर्बाध।

अकंठ वि. (तत्.) 1. बिना कंठ का, कंठरहित 2. स्वरहीन 3. कर्कश।

अकंत वि. (तत्.) 1. जिसका पति उसके साथ में न रहता हो 2. अनाथ।

अकंथ वि. (तत्.+तद्.) 1. कंथा/गुदड़ी (फटे-पुराने वस्त्रों को मिलाकर कलात्मक रूप से सिलकर बनाया जाने वाला एक वस्त्र) से रहित 2. वस्त्र-विहीन, गरीब।

अकंप वि. (तत्.) जिसमें कंपन न हो, निश्चल, स्थिर।

अकंपन वि. (तत्.) 1. कंपन-रहित, जो काँपता न हो, स्थिर 2. दृढ़, कठोर पुं. 1. कंपन का अभाव, स्थिरता 2. दृढ़ व्यक्ति 3. कठोर वस्तु।

अकंपित वि. (तत्.) जो कंपन-रहित हो, जो काँपा न हो, जो स्थिर हो।

अकंप्य वि. (तत्.) जिसे कंपाया न जा सके, जिसे कंपित न किया जा सके, स्थिर, अटल, सुदृढ़, मजबूत।

अकच वि. (तत्.) जिसके सिर पर बाल न हों, गंजा पुं. राहु नामक छायाग्रह।

अकचक स्त्री. (तद्./देश.) 1. विस्मय, आश्चर्य-चकित होने का भाव 2. दुविधा 3. सकपकाहट।

अकचकाना अ.क्रि. (तद्./देश.) 1. अचंभित होना, आश्चर्यान्वित होना 2. सकपकाना 3. दुविधाग्रस्त होना।

अकटुक वि. (तत्.) कटुता रहित, जो कटु/कड़वा न हो।

अकठोर वि. (तत्.) 1. कठोरता से रहित, कोमल 2. निष्ठुरता से रहित, स्नेहार्द्र, दयालु 3. सरल प्रकृति वाला।

अकड़ स्त्री. (देश.) 1. अकड़ने का भाव, ढिठाई 2. ऐंठ, घमंड।

अकड़आ पुं. (तद्.) आक, अक्खा, अर्क (वृक्ष), मदार।